वार्षिक प्रतिवेदन

2019-20

डा० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा, (समस्तीपुर), बिहार - 848125

वार्षिक प्रतिवेदन

2019-20

डा० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा, (समस्तीपुर), बिहार - 848125

वार्षिक प्रतिवेदन
(2019–20)

संरक्षक :
डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव
कुलपति, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

संकलन और संपादन :
डॉ. राकेश मणि शर्मा, अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग
डॉ. पी.के. प्रणव, एसोसिएट प्राध्यापक
श्री गुप्तनाथ त्रिवेदी, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ. आशीष कुमार पांडा, सहायक प्राध्यापक

वैज्ञानिक हिंदी अनुवाद :
गुप्तनाथ त्रिवेदी एवं डॉ. राकेश मणि शर्मा

तकनीकी सहायता :
डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी, सहायक प्राध्यापक
श्री मनीष कुमार, पुस्तकालय सहायक

मुद्रण सहायता :
डॉ. अशोक कुमार यादव, उप–रजिस्ट्रार
डॉ. कुमार राज्यवर्धन, प्रकाशन सलाहकार

प्रकाशन प्रभार :
प्रकाशन विभाग, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, (समस्तीपुर), बिहार – 848125

मुद्रण :
के.जी. इन्टरप्राईजेज, पटना–6

लोकसभा / राज्यसभा के पटल पर प्रस्तुति के लिए दस्तावेज

AUTHENTICATED

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर, बिहार –848125

वर्ष 2019–20 के दौरान विश्वविद्यालय की समीक्षा।

पृष्ठभूमि

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (RPCAU) पूसा की स्थापना वर्ष 2016 में हुई। इस विश्वविद्यालय को भारत में संगठित कृषि शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार की समृद्ध विरासत एवं संगठित कृषि शिक्षा की जननी माना गया है। वास्तव में इस संस्थान को वर्ष 1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा कृषि अनुसंधान संस्थान और महाविद्यालय के रूप में स्थापित किया गया था। वर्तमान में डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय कृषि छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली कृषि शिक्षा, अनुसंधान तथा कृषि समुदाय के विकास के लिए प्रसार सेवाओं के माध्यम से स्वास्थ्य और शिक्षा में उनकी बेहतरी और सशक्तिकरण के लिए निरंतर प्रयासरत है। इन विधाओं में किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय द्वारा कई शिक्षक, प्रशासक, नीति निर्धारक और शैक्षणिक और अनुसंधान संगठनों, सरकारी विभागों, बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में वरिष्ठ पदाधिकारी तैयार किए गये हैं। हमारे अनुसंधान एवं प्रसार कार्य के माध्यम से विज्ञान एवं कृषि के क्षेत्र में न केवल बिहार बल्कि पूरे देश लाभान्वित हुआ है।

उपलब्धियॉ

पेशेवर योग्यता को बढावा देने के उद्येश्य से विश्वविद्यालय कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में शिक्षा, अनुसंधान और उद्यमशीलता में उत्कृष्टता हासिल करने की दिशा में सफलता के पथ पर आगे बढ रहा है, ताकि क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक आवश्यकता को पूरा करने के लिए नैतिक मूल्यों बरकरार रखते हुए कृषि समुदाय के उत्कृष्ट आजीविका हेतु विशेष सेवाएं प्रदान कर सके।

वित्तीय वर्ष 2019–20 की कुछ प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित थी–

शैक्षिक और शैक्षणिक

विश्वविद्यालय ने समीक्षाधीन वर्ष के दौरान शैक्षणिक मोर्चे पर उत्कृष्ट प्रगति की है। पिछले वर्ष की तुलना में 32.48% वृद्धि दर्ज करते हुए भारत के 27 राज्यों से कुल 546 छात्रों को प्रवेश दिया गया था। विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण छात्रों ने विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं जैसे SRF (18), JRF (21), NET (40), GATE (8), Govt.। नौकरी (17) यूजीसी फेलोशिप (3) और कैट (1) आदि में सफलता हासिल की, साथ हीं लगभग 50% प्रबंधन के छात्रों और 25% अन्य छात्रों को COVID–19 महामारी से पहले नौकरी हासिल हो गयी ।

विश्वविद्यालय–उद्योग संपर्क की कड़ी को मजबूत करने के लिए स्नातकोत्तर एवं पीएचडी कार्यक्रम के विभिन्न विषयों में नामांकन हेतु कुल स्वीकृत संख्याबल के अरिरिक्त 5 प्रतिशत सीट प्रदान किया गया है। इस कार्यक्रम के अलावे, स्नातकोत्तर और पीएचडी के विभिन्न विषयों में विदेशी छात्रों के प्रवेश का अवसर उपलब्ध कराया गया है ताकि शिक्षा को और मजबूती मिल सके, साथ हीं छात्रों और शिक्षकों के पारस्परिक शैक्षणिक लाभ के लिए तीन राष्ट्रीय और एक अंतरराष्ट्रीय संस्थान के साथ सहयोग किया गया है। शैक्षणिक कार्य एवं अनुसंधान में शुचिता बनाये रखने के लिए, साहित्यिक नकल विरोधि अधिनियम लागू किए गये हैं। NAHEP कार्यक्रम के तहत, विश्वविद्यालय में ई–गवर्नेंस के कार्यान्वयन की पहल की गई है।

नव नियुक्त 51 सहायक प्राध्यापक– वैज्ञानिकों के लिए संकाय प्रेरण कार्यक्रम का आयोजन 1 से 21 अगस्त, 2019 के

दौरान किया गया था, ताकि उन्हें विश्वविद्यालय के नियम और विनियमन और कृषि और संबद्ध क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों / समस्याओं के बारे में अवगत कराया जा सके।

अनुसंधान एवं नवोन्मेष

विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के माध्यम से विविध कृषि–पारिस्थितिक समस्याओं के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकियों और फसल किस्मों के विकास हेतु सार्थक प्रयास किये जा रहे है। वर्ष 2019–20 के दौरान, सात उन्नत किस्में, यथाः– सीवीआरसी / एसवीआरसी द्वारा राजेंद्र गेहुं –1 एवं 3 (गेहूं), राजेंद्र सरस्वती (धान), राजेंद्र गन्ना – 1 (ईख), राजेंद्र धनिया – 1 एवं 2 (धनिया) और राजेंद्र संकर मक्का – 1 (मक्का) जारी किए गए।

विश्वविद्यालय द्वारा मंदिर में अर्पित पुष्प तथा प्रसाद के उचित निपटान करके उन्हें मूल्य वर्धित उत्पादों में परिवर्तित करने का अद्वितीय मॉडल विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय के तकनीकी सहयोग से, बाबा बैद्यनाथ मंदिर, देवघर (झारखंड) और बाबा गरीबनाथ मंदिर, मुजफ्फरपुर (बिहार)मंदिरों में भगवान शिव को अर्पित पुष्प को अब वर्मि–कम्पोस्ट में परिवर्तित जा रहा है और इसकी बिक्री से विगत मात्र 3 माह में 4.00 लाख रु0 का राजस्व प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालय ने होली के त्यौहार के अवसर पर उपयोग के लिए पुष्प और हर्बल अर्क के साथ इको हर्बल गुलाल रंग भी विकसित किया है। इसके अलावा, भूजल नवीनीकरण के लिए और अतिरिक्त पानी की निकासी के लिए एक पुनर्भरण (रिचार्ज) संरचना विकसित की गई है। इस प्रणाली से स्वच्छ जल को 6.5 पौन्ड तक स्वच्छ जल का पुनर्भरण होता है।

प्रसार

विश्वविद्यालय ने कृषक समुदाय के आर्थिक उत्थान के लिए अपने प्रौद्योगिकी के हस्तान्तरण हेतु बुनियादी ढाँचा विकसित किया है। वर्ष 2019–20 के दौरान, चार नए कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापित किए गए थे और कर्मचारियों की भर्ती प्रक्रिया शुरू की गई थी। किसान मेला –2020 का आयोजन 16 से 18 फरवरी 2020 के अवधि में किया गया था जिसका मुख्य विषय था ग्रामीण जीविकोपार्जन हेतु अवशिष्ट प्रबन्धन। विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न प्रशिक्षणों से कुल 3576 किसान लाभान्वित हुए तथा 5730 एफएलडी, 85 ओएफटी और 15 प्रौद्योगिकी मूल्यांकन परीक्षण का कार्य किया गया।

प्रशासनिक और ढांचागत उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय ने प्रशासनिक और बुनियादी ढांचे को उत्क्रमित करने के लिए सभी प्रयास किए हैं। 113 शिक्षक / वैज्ञानिक और 12 सहायक कर्मचारियों की पदोन्नति का कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया गया तथा 65 तकनीकी कर्मचारियों की भर्ती भी की गई है। प्रशासनिक सुधार की शुरुआत स्टाफ संरचना के पुनर्गठन और तर्कसंगत बनाने से हुई थी।

उद्यानिकी विभाग के भवन, तीन अनुसंधान केंद्रों के भवन, 72 टाईप–2 आवास, एक महिला छात्रावास और लड़कों के छात्रावास के नवीकरण का कार्य पूरा किया गया। इसके अलावा, पिपराकोठी में हॉर्टिकल्चर एंड फॉरेस्ट्री कॉलेज का प्रशासनिक भवन, सेंटर ऑफ एक्सीलेंसफॉर इम्ब्रये ट्रान्सफर टेक्नोलोजी, पिपराकोठी, यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल एवं स्कूल ऑफ एग्री बिजनेस एंड रूरल मैनेजमेंट भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। छात्रों एवं विश्वविद्यालय कर्मियों के उपयोग के लिए विश्वविद्यालय परिसर में सुसज्जित व्यायामशाला स्थापित की गई थी।

विश्वविद्यालय द्वारा परामर्श सेवा, परीक्षण, लाइसेंसिंग, प्रशिक्षण और बिक्री के माध्यम से राजस्व सृजन में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वित्त समिति और विश्वविद्यालय प्रबंध बोर्ड की मंजूरी के बाद CAG द्वारा 2018–19 के लेखा–जोखा का ऑडिट किया गया।

मान्यता और पुरस्कार

यूनिवर्सिटी को ACEEU के एशिया पैसिफिक रीजन अवार्ड के लिए ग्रीन यूनिवर्सिटी ऑफ द ईयर 2020 के लिए शीर्ष पांच में नामित किया गया था।

विश्वविद्यालय के शिक्षकों / वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न स्तरों पर कुल 79 पुरस्कार (1 अंतर्राष्ट्रीय, 72 राष्ट्रीय और 06 राज्य स्तर पर) उनके शैक्षणिक और अनुसंधान में उत्कृष्टता के लिए प्राप्त किए गए थे।

प्रकाशन

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने जर्नल में 237 शोधपत्र, 26 पुस्तकें, 80 पुस्तक अध्याय, 5 प्रशिक्षण मैनुअल, 3 नीति पत्र और 16 तकनीकी / शोध बुलेटिन प्रकाशित किए हैं

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान पांच पेटेंट दायर किए गए थे।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार

संसद में वर्ष 2019–20 के लिए वार्षिक प्रतिवेदन पेश करने में विलम्ब का विवरण

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, बिहार, पूसा, समस्तीपुर के संदर्भ में वर्ष 2019–20 के लिए वार्षिक प्रतिवेदन मई 2020 के महीने में तैयार की गई थी, और प्रबंध मंडल को 29.05.2020 पर अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किया गया और अंत में प्रबंध मंडल द्वारा 18.06.2020 को अनुमोदित किया गया। COVID-19 महामारी के तहत लॉकडाउन की स्थिति के बावजूद 2019–20 की वार्षिक रिपोर्ट तैयार करने में थोड़ी विलम्ब हुई।

संसद में वर्ष 2019–20 के लिए वार्षिक प्रतिवेदर्न देने में देरी के कारणों को दिखाने वाला विवरण नीचे दिया गया है:–

विश्वविद्यालय के प्रबंध बोर्ड द्वारा अनुमोदन के लिए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना	:	29.05.2020
प्रबंध बोर्ड द्वारा वार्षिक रिपोर्ट की स्वीकृति	:	18.06.2020
कुलाध्यक्ष की मंजूरी के लिए वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना	:	25.08.2020
कुलाध्यक्ष की स्वीकृति की प्राप्ति	:	05.02.2021
संसद के पटल पर प्रस्तुत करने हेतु वार्षिक प्रतिवेदन की मुद्रित प्रतियों को कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग को समर्पित करना		

प्रस्तावना

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के चतुर्थ वार्षिक रिपोर्ट (2019 –20) को इसके संक्षिप्त प्रारूप में प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत गौरव और हर्ष की अनुभूति हो रही है। विस्तृत जानकारी हेतू ,संक्षिप्त प्रारूप का विस्तृत रिपोर्ट विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है। रिपोर्ट वर्ष के दौरान, विश्वविद्यालय ने अकादमिक उत्कृष्टता, प्रौद्योगिकी विकास एवं विस्तार तथा बुनियादी ढांचे के विकास सहित अन्य सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।

देश के 27 राज्यों के छात्र प्रतिनिधित्व से हमारी छात्र शक्ति में काफी वृद्धि हुई है। उन्होंने भारत एवं विदेशों के प्रतिष्ठित संस्थानों के पी.जी. प्रवेश परीक्षाओं में सफलता के साथ–साथ प्लेसमेंट में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। उभरती हुई स्थिति से निपटने के लिए प्रौद्योगिकी विकास के हमारे प्रयासों से जलवायु परिवर्तन, फसल प्रणाली, भूजल पुनर्भरण और धान के पुआल आधारित मशरूम की खेती के लिए प्रौद्योगिकी विकसित हुई है। हमारे अनुसंधान कार्यक्रम को विशिष्ट एवं समाधानोंन्मुख बनाने के लिए अंतःविषयी दृष्टिकोण के साथ जल प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, खाद्य प्रसंस्करण और कचरे से धनोपार्जन जैसे समस्याओं के समाधान हेतु नए अनुसंधान केंद्र स्थापित किए गए हैं।

मैं इस विश्वविद्यालय के विजिटर एवं भारत के माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद जी, डॉ. नरेन्द्र सिंह तोमर जी, माननीय मंत्री कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति प्रो. पी. के. मिश्रा जी को उनके उन्मुक्त समर्थन और मार्गदर्शन के लिए सहृदय आभार व्यक्त करता हूं। मैं डॉ. टी. महापात्रा, सचिव डेयर, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रोत्साहन और समर्थन के लिए बहुत आभारी हूं। मैं सभी अधिष्ठाताओं, निदेशकों, रजिस्ट्रार, विभागों के प्रमुख, परियोजनाओं के पी.आई., के.वी.के. के प्रमुख, वैज्ञानिकों, शिक्षकों एवं अन्य प्रशासनिक, तकनीकी तथा सहायक कर्मचारियों को रिपोर्ट के लिए बहुमूल्य जानकारी उपलब्ध कराने हेतु उनकी सराहना करता हूँ। मैं, वार्षिक रिपोर्ट 2019–20 की ससमय तैयारी और प्रकाशन के लिए विश्वविद्यालय प्रकाशन विभाग की पूरी टीम को बधाई देता हूँ।

Srivastava

(डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव)
कुलपति
डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर (बिहार)– 848125

हम कौन हैं ?

वर्ष 2016 में स्थापित हम डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, भारतवर्ष में संगठित कृषि शिक्षा, कृषि अनुसन्धान और कृषि विस्तार की अत्यंत समृद्ध विरासत तथा संगठित कृषि शिक्षा की जननी हैं जो इस तथ्य से परिलक्षित होता है कि, सन 1905 में लार्ड कर्जन के द्वारा हमें 'कृषि अनुसन्धान संस्थान और महाविद्यालय' के रूप में इस दृष्टिकोण के साथ स्थापित किया गया था कि पूसा, कृषि क्रियाकलापों, अनुसंधान और शिक्षा का केंद्र बनेगा जो न केवल बिहार, बंगाल बल्कि समस्त भारत (तत्कालीन ब्रिटिश भारत) एवं विश्व के सर्वोत्तम प्रतिभाओं को आकर्षित एवं लाभान्वित करेगा। तदोपरान्त यह संस्थान विकास की अनेक सीढियाँ चढ़ चुका है। हमारा अतीत गौरवशाली रहा है कि हमारे संस्थापकों ने स्नातक और परास्नातक डिप्लोमा कार्यक्रमों और गन्ना शोध संस्थान की स्थापना के माध्यम से कृषि में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा और अनुसंधान प्रदान करने की कल्पना की।

हम क्या करते हैं ?

डॉ. रा. प्र. के. कृ. वि. पूसा में, हम कृषि जगत से जुड़े समस्त बान्धवों ,छात्रों और किसानों को उच्च गुणवत्ता वाली कृषि शिक्षा, अनुसंधान और कृषि विस्तार सेवाओं को प्रदान करते हैं तथा स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक कल्याण में उनकी निरंतर बेहतरी और सशक्तिकरण के लिए कार्य करते हैं। इन दिशाओं में हमारे सतत प्रयासों के फलस्वरूप इस विश्वविद्यालय ने कई शिक्षकों, प्रशासकों एवं नीति नियोजकों को जन्म दिया जो देश के अनेक शैक्षिक एवं अनुसंधान संगठनों, सरकारी विभागों, बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों आदि में विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं। हमारे अनुसंधान और कृषि विस्तार कार्यक्रमों ने किसानों, विज्ञान और कृषि व्यवसाय के अन्य हितधारकों को न केवल बिहार में बल्कि पूरे भारत में बहुत लाभान्वित किया है, जो हमारी अनुभवी शिक्षकों, वैज्ञानिकों, तकनीकी, प्रशासनिक एवं सहायक कर्मचारियों के ठोस प्रयासों से हीं संभव हो पाया है।

आप को इस विश्वविद्यालय से क्यों जुड़ना चाहिए ?

क्योंकि, हम पूर्वी भारत में कृषि शिक्षा, अनुसन्धान एवं कृषि विस्तार में सर्वश्रेष्ठ हैं एवं हमारे विश्वविद्यालय में समस्याओं के विशिष्ट समाधान के लिए समर्पित ग्यारह अनुसंधान केंद्रों / संस्थानों के अलावा आठ महाविद्यालय हैं जो इस प्रकार हैं– तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली; कृषि परास्नातक महाविद्यालय, पूसा; कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय, पूसा; आधार विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय, पूसा; सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, पूसा; मत्स्यकी महाविद्यालय ढोली, उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय, पीपरा कोठी तथा कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन विद्यालय। हमारा विश्वविद्यालय परिसर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक, अनुसंधान एवं कृषि विस्तार की गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए शांत, सुरम्य एवं वृक्षों से आच्छादित हरे–भरे वातावरण में अवस्थित है तथा हमारे पास उत्कृष्ट बुनियादी सुविधाओं के अलावा शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, प्रशासकों और तकनीशियनों की समर्पित टीम है जो विश्वविद्यालय के उत्थान के प्रति अपने सेवाओं का निर्वहन कर रही है । प्रयोगशालाएं, डिजिटल सेंट्रल लाइब्रेरी, स्मार्ट क्लासरूम, एरिस सेल, प्लेसमेंट सेल, केवीके नेटवर्क, छत्रावास, अतिथि भवन, ऑडिटोरियम, खेलकूद कॉम्प्लेक्स, जिम और अन्य आईटी सक्षम सेवाएं समर्थन प्रणाली के रूप में कार्य कर रही हैं। हम परिसर को जीने का बेहतर स्थान बनाने के लिए नए बुनियादी ढांचे को जोड़ने और सुधारने की प्रक्रिया में हैं। सम्पूर्ण भारत से छात्रो के प्रवेश, संकायों और आधारभूत सुविधाओं के विकास, उनकी मांग एवं आपूर्ति इत्यादि के लिए किये गए हमारे सभी कार्यो से हमारा समर्पण, दृढ़ इच्छा शक्ति और संकल्प प्रदर्शित होता है, अतएव आप को इस विश्वविद्यालय से जुड़ना चाहिए।

हमारे गौरवशाली क्षण

विजिटर के समक्ष प्रस्तुति :

भारत के माननीय राष्ट्रपति, श्री राम नाथ कोविंद जी, ने 14 दिसंबर 2019 को राष्ट्रपति भवन में केंद्रीय विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा के 46 संस्थानों के प्रमुखों के एक सम्मेलन की मेजबानी की, जिसमें रा. प्र. के. कृ. वि. वि., पूसा का प्रतिनिधित्व माननीय कुलपति डॉ आर. सी. श्रीवास्तव ने किया। तीनों केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालयों की ओर से, उन्होंने विश्वविद्यालयों की सर्वोत्तम क्रियाकलापों,और उपलब्धियों पर एक प्रस्तुति दी। विश्वविद्यालय का एक प्रतिनिधि के रूप में राष्ट्रपति भवन में उपस्थिति समस्त विश्वविद्यालय परिवार के लिए अत्यंत गौरव एवं हर्ष का क्षण था।

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा समस्तीपुर, बिहार –848125 (बिहार)

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
भारतीय किसानों की सेवा में समर्पित
Visitor
Chancellor
Vice Chancellor
Board of Management
Academic Council
Research Council
Extension Council
Finance committe
Registrar
Director Education
Director Research
Comptroller
Academic & General Administration
Academic Activities
Research Programmes
KVKs and Extension Activities
Financial Management

कार्यकारी सारांश

रिपोर्ट की अवधि के दौरान, विश्वविद्यालय कृषि और संबद्ध विषयों में उच्च शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार के लिए गतिशील संस्थान के रूप में उभरा है। विश्वविद्यालय ने शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार, बुनियादी ढांचे के विकास, पुस्तकालयों और प्रयोगशालाओं, छात्रावासों, व्यायामशालाओं, कर्मचारियों के कल्याण और महिला सशक्तीकरण में अत्याधुनिक सुविधाओं का सर्वांगीण विकास किया है। इस वर्ष भारत के 27 राज्यों के कुल 546 छात्रों ने प्रवेश लिया तथा पिछले वर्ष की तुलना में 32.48 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की, जो विश्वविद्यालय के अखिल भारतीय उपस्थिति को दर्शाता है। इस साल विश्वविद्यालय के 96 छात्रों ने एस.आर.एफ., जे.आर.एफ., गेट, नेट और राष्ट्रीय फैलोशिप आदि जैसे राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न परीक्षाओं में सफलता हासिल की। COVID–19 लॉकडाउन प्रभाव के बावजूद भी हमारे कृषि व्यवसाय प्रबंधन / ग्रामीण प्रबंधन का लगभग 50: और इच्छुक स्नातक एवं स्नातकोत्तर के 25 प्रतिशत छात्रों को देश के प्रतिष्ठित संगठनों तथा कंपनियों में नौकरी के सुअवसर मिले है।

संकाय सदस्यों और छात्रों ने वैज्ञानिक शोध पत्रों, पुस्तकों और पुस्तक अध्यायों, तकनीकी बुलेटिनों और शोध प्रबंधों की अच्छी संख्या में प्रकाशन किया तथा चावल, गेहूं, मक्का, गन्ने धनिया जैसी विभिन्न फसलों की कई उन्नत किस्मों को भी विकसित किया और उन्हें एस.वी.आर.सी. एवं सी.वी.आर.सी. के माध्यम से जारी किया गया। उन्होंने जलवायु अनुकूल कृषि, धान गेहूं की फसल प्रणाली, भूजल पुनर्भरण,और धान के भूसे पर आधारित मशरूम उत्पादन आदि के लिए आशाजनक तकनीकें विकसित की है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उत्पादों और सेवाओं को किसानो की आय बढ़ाने और किसान–हितैषी प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन हेतु, किसान मेले, एफ.एल.डी, ओ.एफ.टी, प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि का आयोजन कर किसानों को हस्तांतरित किया गया है, जिससे 35761 किसानों को वैज्ञानिक खेती और कचरा प्रबंधन का समृद्ध ज्ञान प्राप्त हुआ है। विश्वविद्यालय ने जलवायु परिवर्तन, खाद्य प्रसंस्करण और पोषण, जल प्रबंधन, अपशिष्ट प्रबंधन, कृषि मशीनरी, मशरूम उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण और स्टार्ट–अप सुविधा केंद्र जैसे समकालीन और चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में उत्कृष्टता के छह नए केंद्र बनाए हैं जो कृषक केंद्रित अनुसंधान और नवाचार को उल्लेखित करते हैं। विश्वविद्यालय के अपशिष्ट प्रबंधन प्रौद्योगिकी और सौर ऊर्जा के उपयोग प्रणाली को ACEEU के एशिया पैसिफिक रीजन अवार्ड के लिए 'ग्रीन यूनिवर्सिटी ऑफ द ईयर 2020' द्वारा पुरस्कृत एवं सराहा गया।

विश्वविद्यालय ने शिक्षण और अनुसंधान की गुणवत्ता और उन्नयन के लिए 113 वैज्ञानिकों एवं शिक्षकों, 65 तकनीकी और 12 सहायक कर्मचारियों को उनके अगले उच्च ग्रेड में पदोन्नत किया और 51 वैज्ञानिकों/शिक्षकों, तथा 89 तकनीकी कर्मचारियों की भर्ती की, जिससे वैज्ञानिक और शिक्षण जनशक्ति को मजबूती मिली है। भा. रा. कृ. अनु. प.,नयी दिल्ली पैटर्न के तकनीकी सेवा नियम को अपनाने के साथ–साथ विश्वविद्यालय के कर्मचारियों की संरचना का पुनर्गठन और युक्तिकरण भी किया गया है। इन सभी कदमों से वैज्ञानिक जनशक्ति और उनकी उत्पादकता में वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय को 08.61 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है।

रिपोर्ट वर्ष के अंत तक, COVID–19 वैश्विक महामारी ने देश को बहुत नुकसान पहुंचाया। विश्वविद्यालय प्रशासन ने भारत सरकार द्वारा जारी सभी सलाहों एवं निर्देशों का पालन किया तथा सुरक्षात्मक दृष्टिकोण और सर्वोत्तम तरीको को अपनाते हुए बहुत हीं प्रभावी ढंग से COVID–19 महामारी से निपटा। इस दिशा में कई कदम जैसे, थर्मल स्क्रीनिंग, मास्क बनाना तथा पहनना, हाथ साफ करना, परिसर में सैनिटाइजर का छिड़काव करना, सामाजिक दूरी को बनाए रखना, आदि जैसे उपायों को अपनाया जिससे घातक वायरस पर पूर्ण नियंत्रण सुनिश्चित हो सके। विदित है कि विश्वविद्यालय और उसके आसपास तीन से चार क्वारंटाइन केंद्र होने के बावजूद COVID–19 पॉजिटिव का एक भी मामला परिसर से नहीं पाया गया है। हम परिसर के सभी निवासियों को सुरक्षित और स्वस्थ रखने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

विश्वविद्यालय : एक परिचय

यह विश्वविद्यालय अपने पूँजी के रूप में राज्य कृषि विश्वविद्यालय के रूप में 1970 में स्थापित राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा तथा इससे भी पूर्व 1905 में स्थापित कृषि अनुसंधान संस्थान और महाविद्यालय की विरासत को संजोये हुए है। विश्वविद्यालय अपने अधिकार क्षेत्र और जिम्मेदारियों का विस्तार करते हुए कृषि और संबद्ध विज्ञान के विषयों में शिक्षण,अनुसंधान और प्रसार के क्षेत्र में सम्पूर्ण भारत में तथा विशेषकर गृह राज्य बिहार में अपनी सेवाओं का निर्वहन कर रहा है। विश्वविद्यालय की शैक्षणिक संरचना में 08 कॉलेज तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढ़ोली; स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय, पूसा; कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, पूसा; सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, पूसा; आधार विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय, पूसा; मत्स्यकी महाविद्यालय, ढ़ोली और पंडित दीन दयाल उपाध्याय उद्यानिकी और वानिकी महाविद्यालय, पीपराकोठी एवं कृषि–व्यवसाय और ग्रामीण प्रबंधन विद्यालय शामिल है जिनमें कुल 215 वैज्ञानिक/शिक्षक कार्यरत है। विश्वविद्यालय में छह चीनी मिलों से जुड़े छह गन्ना परीक्षण केंद्रों के अलावा आठ बहु–विषयक अनुसंधान केंद्रों / संस्थानों और तीन क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों का नेटवर्क है। विश्वविद्यालय के विस्तार में 18 (16+2) कृषि विज्ञान केंद्र और कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केंद्र (ए.टी.आई.सी) शामिल हैं जो विश्वविद्यालय की प्रौद्योगिकी गतिविधियों की देखरेख करते हैं।

भाविष्यिक-दृष्टिकोण (Vision)

- क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक आवश्यकताओं को पूरा करने और किसानों की आजीविका हेतु विशेष सेवाओं तथा नैतिक मूल्यों के साथ कृषि और सम्बंधित क्षेत्रों में शिक्षा, अनुसंधान और उद्यमिता में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए पेशेवर योग्यता को आगे बढ़ाना।

लक्ष्य (Mission)

- उच्च गुणवत्तापूर्ण अध्ययन के माहौल को बढ़ावा देते हुए एकीकृत दृष्टिकोण का निर्माण करना जो पर्यावरण और मृदा–वनस्पति–पशु–मानव के अंतरपटल की समझ को विकसित करता है।
- नवाचार–केंद्रित शिक्षा, अत्याधुनिक अनुसंधान, उद्यमिता/कौशल विकास चालू होना और उपयुक्त कृषि प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से कृषि हितधारकों को आत्मनिर्भर तंत्र को में आकार देना।
- अनुसंधान और विकास के अग्रिम हस्तक्षेपों के माध्यम से कृषि भूमि पर दबाव को कम करते हुए स्थायी खाद्य उत्पादन और सुरक्षा प्राप्त करने की राष्ट्रीय एवं वैश्विक आवश्यकताओं का पोषण करना।

अधिदेश (Mandate)

- कृषि और संबद्ध विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में शिक्षा प्रदान करना।
- कृषि और पशु उत्पादों की उत्पादकता और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों विकसित के लिए आधारभूत, रणनीतिक और अनुप्रयुक्त अनुसंधान करना।
- किसानों हेतु वैज्ञानिक जानकारी के प्रसार के लिए 'लैब टू लैंड' के दृष्टिकोण के साथ कार्य करना।
- आधार और प्रमाणित बीजों के उत्पादन और गुणन के लिए प्रजनक बीजों की आपूर्ति में राज्य सरकार की मदद करना।
- उद्योगों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य लोगों को कृषि अनुसंधान और विकास में परामर्श सेवाएं और विशेषज्ञता प्रदान करना।

मुख्य उपलब्धियों की एक झलक

शिक्षण

- पिछले वर्ष छात्रों की संख्या में 32.5: की वृद्धि हुई जिसमे देश के कुल 27 राज्यों के छात्र शामिल हुए।
- उच्च शिक्षा के लिए हुई विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में अच्छी संख्या में छात्र उत्तीर्ण हुए यथा, एस.आर.एफ. (18), जे.आर.एफ. (21), नेट (40), गेट (8), यू.जी.सी. फेलोशिप (3), कैट (1), इसके अलावे 17 छात्रों को विभिन्न संस्थाओं में नौकरी के अवसर भी मिले ।
- बेहतर शैक्षणिक–उद्योग कड़ी के लिए परास्नातक पाठ्यक्रम में उद्योग–प्रायोजित सीट बनाई गई ।
- छात्रों और शिक्षकों के पारस्परिक शैक्षणिक लाभ के लिए 3 राष्ट्रीय और एक अंतर्राष्ट्रीय संस्थान के साथ सहयोग किया गया।
- बेहतर रोजगार के लिए सॉफ्ट–स्किल पर छात्रों को प्रशिक्षण देना शुरू किया गया ।
- लगभग 50% प्रबंधन और 25% अन्य छात्रों को COVID–19 वैश्विक महामारी से पूर्व नौकरी मिली।

अनुसंधान

- कुल सात किस्में जारी की गईं जिनमे दो गेहूं, दो धनिया, एक चावल, एक संकर मक्का और एक गन्ना शामिल है।
- प्रौद्योगिकी विकसित– जलवायु आधारित चावल–गेहूं की फसल प्रणाली, भूजल पुनर्भरण प्रणाली और धान के भूसे आधारित मशरूम का उत्पादन।
- जर्नल्स में शोध लेख (237), पुस्तकें (26), पुस्तक अध्याय (80), प्रशिक्षण मैनुअल (05), नीति पत्र (03) और तकनीकी / अनुसंधान बुलेटिन (16) का प्रकाशन किया गया
- रिपोर्टिंग वर्ष के दौरान पांच पेटेंट दायर किए गए।
- कुल 17 नई बाह्य वित्त पोषित परियोजनाएं 49.02 करोड़ रु के बजट में प्राप्त हुई।
- जल प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, खाद्य प्रसंस्करण, मशरूम, कचरे से धनोपार्जन और स्टार्ट–अप, पर अनुसंधान के छह उत्कृष्ट केंद्र शुरू किए गए।
- केंद्रीय इंस्ट्रूमेंटेशन सुविधाएं, बांस प्रसंस्करण केंद्र और एडवांस एग्रो–मेट्रोलॉजिकल सेंटर स्थापित किये गए।
- घर के कचरे ,बाबा धाम मंदिर, देवघर (झारखंड) और बाबा गरीबनाथ मंदिर, मुजफ्फरपुर (बिहार) में अर्पित फूल–पत्तियों का वैज्ञानिक विधियों से अपशिष्ट प्रबंधन किया गया।
- आंतरिक और बाह्य कृषि गतिविधियों में सौर ऊर्जा का उपयोग कर हरित ऊर्जा का उपयोग।
- विश्वविद्यालय ने उद्यमिता और संलग्न विश्वविद्यालयों के लिए प्रत्यायन परिषद 2020, एशिया पैसिफिक, एम्स्टर्डम के द्वारा ग्रीन एशिया यूनिवर्सिटी ऑफ एशिया पैसिफिक रीजन अवार्ड की अंतिम सूची में जगह दर्ज किया।

कृषि प्रसार

- चार नए कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना और कर्मचारियों की भर्ती प्रक्रियाओं की शुरुआत।
- रेडियो / टीवी पर 52 संवाद किया गया ।
- 5730 एफ.एल.डी और 85 ओ.एफ.टी. का संचालन किया गया ।
- 15 प्रौद्योगिकी मूल्यांकन परीक्षणों का आयोजन किया गया ।
- किसान मेला– एक परिसर में और दूसरा मधुबनी में आयोजित हुए ।
- विभिन्न प्रशिक्षणों और किसान मेला से कुल 3576 किसान लाभान्वित हुए।
- बेहतर प्रश्नोत्तरी के लिए किसान कॉल सेंटरों को मजबूत किया गया।

प्रशासनिक/आधारभूत संरचना

- शिक्षकों / वैज्ञानिकों, 12 सहायक कर्मचारी की प्रोन्नति और 65 तकनीकी कर्मचारियों की नियुक्ति की गई।
- स्टाफ संरचना का पुनर्गठन कर युक्ति संगत बनाने हेतु प्रशासनिक सुधार किया गया।
- उद्यान विभाग के भवन, तीन अनुसंधान केंद्र भवन, 72 टाइप – भवन एवं महिला छात्रावास का निर्माण कार्य पूरा हुआ एवं पुरुष छात्रावास का नवीनीकरण किया गया ।
- निर्माण कार्य जो प्रगति पर है– महिला,पुरुष का छात्रावास, पिपराकोठी में उद्यान और वानिकी महाविद्यालय का प्रशासनिक भवन, पिपराकोठी में एम्ब्रियो ट्रांसफर टेक्नोलॉजी के लिए उत्कृष्टता केंद्र, विश्वविद्यालय अस्पताल और कृषि व्यवसाय और ग्रामीण प्रबंधन संस्थान भवन।
- कृषि–उत्पादन, परामर्श, परीक्षण, लाइसेंसिंग, प्रशिक्षण और बिक्री के माध्यम से राजस्व उत्पादन में 30: की वृद्धि दर्ज की गयी ।
- वित्त समिति और विश्वविद्यालय प्रबंधन बोर्ड की मंजूरी के बाद कैग द्वारा 2018–19 का लेखा परीक्षण किया गया ।

संगठनात्मक संरचना

विश्वविद्यालय के कार्यकारी निकाय :

- प्रबंधक मंडल
- वित्त समिति
- शैक्षणिक परिषद
- अनुसंधान परिषद
- प्रसार शिक्षा परिषद

विश्वविद्यालय प्रशासन :

कुलाध्यक्ष	:	श्री रामनाथ कोविंद, भारत के माननीय राष्ट्रपति
कुलाधिपति	:	प्रो. पी. के. मिश्रा
कुलपति	:	डॉ. रमेश चंद्र श्रीवास्तव
कुलसचिव	:	डॉ. रवि नंदन
निदेशक शिक्षा	:	डॉ. एम.एन. झा
निदेशक अनुसंधान	:	डॉ. मिथिलेश कुमार
निदेशक प्रसार शिक्षा	:	डॉ. एम.एस. कुंडू
विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष	:	डॉ. राकेश मणि शर्मा
निदेशक छात्र कल्याण	:	डॉ. ए. के. मिश्रा
नियंत्रक	:	श्री राधा कृष्ण प्रसाद

कॉलेज / संस्थानों के अधिष्ठाता / निदेशक :

डॉ. केएम सिंह	अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय
डॉ. सोमनाथ रॉय चौधरी	अधिष्ठाता, आधार विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय
डॉ. (श्रीमती) मीरा सिंह	अधिष्ठाता, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय
डॉ. कृष्ण कुमार	अधिष्ठाता, पं. दी. द. उपा. उद्यानिकी और वानिकी महावि. (पिपराकोठी, मोतिहारी)
डॉ. अंबरीश कुमार	अधिष्ठाता, कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय
डॉ. एस.सी. राय	अधिष्ठाता, मत्स्यकी महाविद्यालय ढोली, मुजफ्फरपुर
डॉ. ए.के. सिंह	अधिष्ठाता, तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली, मुजफ्फरपुर
डॉ. ए.के. सिंह	निदेशक, गन्ना अनुसंधान संस्थान
डॉ. आर.सी. राय	निदेशक, कृषि व्यवसाय और ग्रामीण प्रबंधन
डॉ. एस.के. जैन	निदेशक, भवन और अवसंरचना
डॉ. आर.एस. वर्मा	निदेशक, संयंत्र और सुविधाएं
डॉ. आरती सिन्हा,	निदेशक, योजना

शिक्षा एवं शैक्षिक गतिविधियां :

विश्वविद्यालय स्नातक के 6–विषयों, परास्नातक के 24–विषयों और पी.एच.डी के 10 विषयों में अपने 8 कॉलेजों के नेटवर्क के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहा है। तिरहुत कृषि महाविद्यालय, परास्नातक कृषि महाविद्यालय, कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, आधार विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय, मत्स्यकी महाविद्यालय और पंडित दीन दयाल उपाध्याय उद्यानिकी और वानिकी महाविद्यालय तथा कृषि–व्यवसाय और ग्रामीण प्रबंधन विद्यालय में कुल 546 छात्रों ने दाखिला लिया (स्नातक–277, परास्नातक–242 और पी.एच.डी में 27) तथा 187 छात्र जिनमे स्नातक (72), परास्नातक (105) और पी.एच.डी (10) उत्तीर्ण हुए। विश्वविद्यालय के कुल 96 छात्रों ने विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं जैसे कि एस.आर.एफ./जे.आर.एफ. / गेट्स / यू.जी.सी नेट, नेशनल फैलोशिप, आदि में सफलता हासिल की । कोविड–19 लॉक डाउन के बावजूद कृषि–व्यवसाय प्रबंधन के 50 प्रतिशत छात्रों तथा 25 प्रतिशत अन्य स्नातक एवं परास्नातक छात्रों को देश के नामी गिरामी कंपनियों एवं संस्थानों में रोजगार के अवसर प्राप्त हुए।

विश्वविद्यालय ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अनुसंधान सुनिश्चित करने के लिए स्मार्ट क्लासेज, डिजिटल लाइब्रेरी, सुसज्जित प्रयोगशालाओं, फैकल्टी अप–ग्रेडेशन, क्षमता निर्माण और एंटी प्लेगिआरिस्म टूल जैसी अत्याधुनिक सुविधाओं और सेवाओं के विकास के माध्यम से शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यों के अनुकूल वातावरण तैयार किया है। विश्वविद्यालय में प्रवेश हेतु एक केंद्रीकृत तथा कैशलेस प्रवेश प्रक्रिया शुरू की गई है जिससे प्रवेश से लेकर परिणाम की घोषणा ससमय किया जा सके। विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के लिए एक प्रभावी निगरानी प्रणाली लागू की गई है। मानव संसाधन विकास के 35 सेमिनार, 66 सम्मेलन, 73 कार्यशालाएं और 64 प्रशिक्षण में भाग लेने की अनुमति दी गई। नव नियुक्त 51 सहायक प्राध्यपकों एवं वैज्ञानिकों के लिए 1 से 21 अगस्त, 2019 के दौरान एक फैकल्टी इंडक्शन कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

फैकल्टी इंडक्शन कार्यक्रम की गतिविधियाँ

केंद्रीकृत प्रवेश प्रणाली

छात्रों का प्रवेश एवं उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण :

नाम कार्यक्रम के	प्रवेश क्षमता	प्रवेश लिए	अवधारण	उत्तीर्ण हुए
स्नातक	319	277	238	72
परास्नातक	276	242	204	105
पी.एच.डी.	32	27	25	10

* उत्तीर्ण की संख्या कम है क्योंकि उन्होंने राज्य कृषि विश्वविद्यालय अवधि के दौरान प्रवेश लिया था जब प्रवेश क्षमता कम थी

उद्योग और विदेशी छात्र

परास्नातक और पी.एच.डी कार्यक्रम के विभिन्न विषयों में कुल प्रवेश क्षमता के अतिरिक्त सीटों के रूप में 5 प्रतिशत सीटें प्रदान करके विश्वविद्यालय–उद्योग लिंकेज को मजबूत किया गया है। इसके अलावा, स्नातकोत्तर और पी.एच.डी कार्यक्रम के विभिन्न विषयों में विदेशी छात्रों के प्रवेश से शिक्षा को बल भी मिला।

शैक्षणिक सुधार की दिशा में पहल

छात्र पंजीकरण से परिणाम घोषणा तक की शैक्षिक गतिविधियों की निगरानी के लिए शैक्षणिक प्रबंधन प्रणाली (अकादमिक मैनेजमेंट सिस्टम) को लागू किया गया है। NAHEP कार्यक्रम के तहत, विश्वविद्यालय में ई–गवर्नेंस के कार्यान्वयन की शुरुआत की गई है। शैक्षणिक अखंडता और शुद्धता को सुनिश्चित करने के लिए साहित्यिक नकल विरोधी नियम भी लागू किये गए है। अन्य राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ संकाय और छात्र विनिमय को बढ़ावा देने के लिए,ऑस्ट्रेलिया विश्वविद्यालय, बायोवेड रिसर्च इंस्टीट्यूट, प्रयागराज और बागवानी प्रौद्योगिकी संस्थान, नोएडा के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

कृषि शिक्षा दिवस, 2019

भारत के प्रथम राष्ट्रपति तथा कृषि मंत्री भारत रत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जन्मदिन 3 दिसंबर, 2019 को डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के पूरे परिसर में 'कृषि शिक्षा दिवस' के रूप में उत्साह से मनाया गया। । कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय कुलपति डॉ. आर.सी. श्रीवास्तव ने किया। उद्घाटन भाषण में, माननीय कुलपति ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद की प्रतिभा और उनके शैक्षणिक एवं व्यावहारिक जीवन और सरल जीवन उच्च विचार के सिद्धांत पर जोर दिया तथा छात्रों और शिक्षकों से उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में इन नैतिक मूल्यों को अपनाने की अपील की ।

कैम्पस प्लेसमेंट

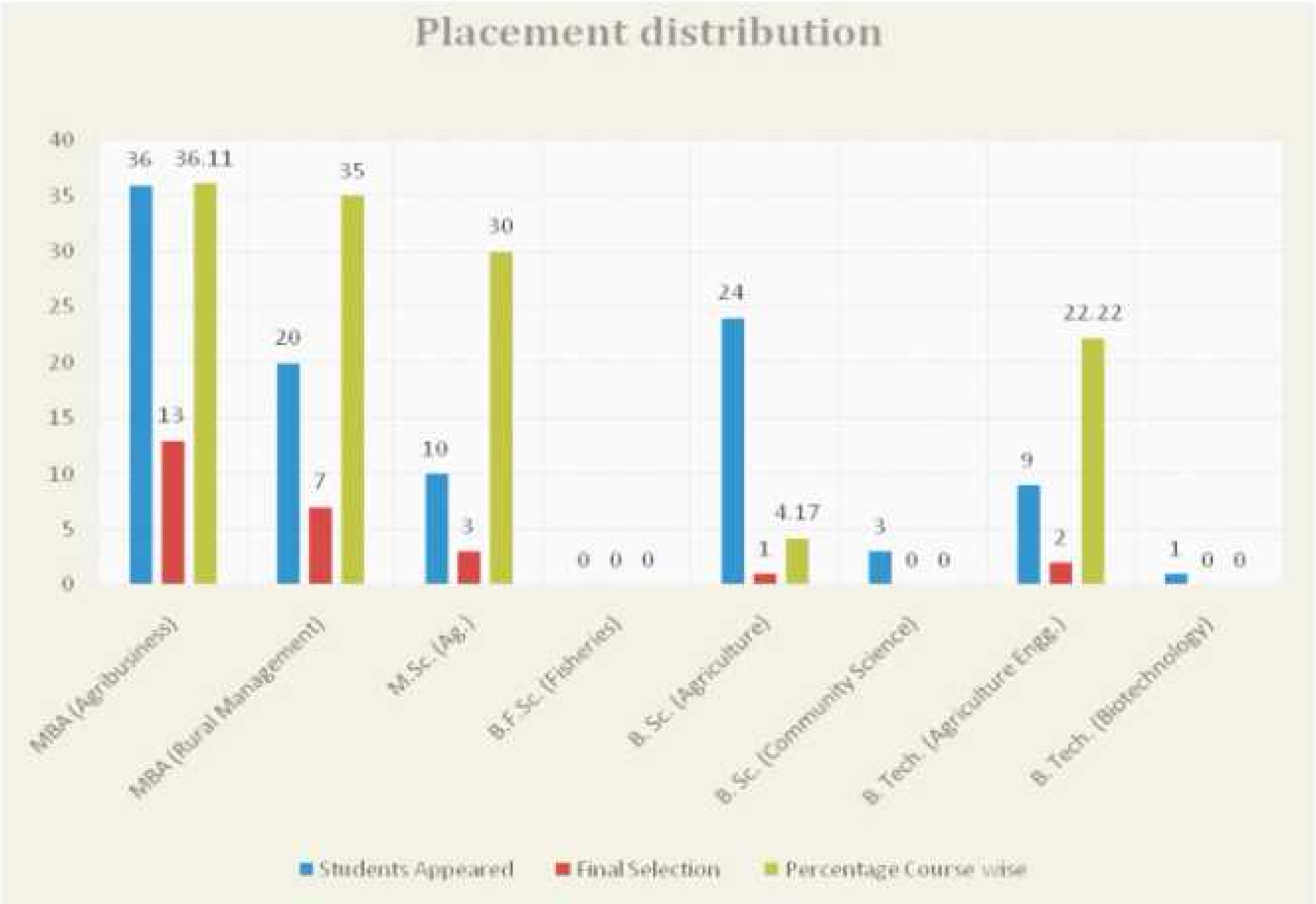

संसाधन उत्पत्ति

विश्वविद्यालय ने विभिन्न उत्पादों और सेवाओं जैसे परामर्श, परीक्षण, ट्यूशन फीस, अनुज्ञप्ति, प्रशिक्षण को प्रदान करते हुए एवं बीज और अन्य उत्पादों की बिक्री के माध्यम से 08.61 करोड़ रुपये का राजस्व उत्पन्न किया है। विश्वविद्यालय ने लगभग 390.568 टन बीज का उत्पादन किया है जिसमे अनुप्युक्त बीज का प्रतिशत मात्र 04.55 रहा जो कि बीज उत्पादन उत्पादन कार्यक्रम में अपनाये गए अच्छे प्रबंधन कार्य को दर्शाता हैं।

अनुसंधान :

विश्वविद्यालय ने विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के माध्यम से विभिन्न कृषि–पारिस्थितिकी के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकियों और फसल किस्मों के विकास में प्रमुख प्रयास किया है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा उत्पन्न आंतरिक राजस्व से पूरा किया जा रहा है। परिचालित अनुसंधान परियोजनाओं का सारांश निचे तालिका में प्रस्तुत है–

क्रम सं.	निधिकरण एजेंसियां	परियोजनाओं की संख्या
1	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (समन्वित)	36
2	अंतरराष्ट्रीय	05
3	भारत सरकार प्रायोजित।	07
4	बिहार सरकार द्वारा वित्त–पोषित परियोजनाएं	05
5	विश्वविद्यालय द्वारा वित्त–पोषित परियोजनाएं	59
6	अन्य	02

नई प्रौद्योगिकियां :

बदलते मौसम के तहत धान–गेहूं की फसल प्रणाली

सर्वप्रमुख धान–गेहूं की फसल प्रणाली में धान की फसल अनियमित वर्षा और गेहूं की फसल टर्मिनल उष्मा जैसी विभिन्न जलवायु सीमाओं के प्रति संवेदनशील हो रही है। 25 मई तक धान की उन्नत नर्सरी बुवाई और 15 जून तक उनकी रोपाई से, अक्टूबर में 10–15 दिन पहले फसलों की कटाई संभव हो गयी जिसके फलस्वरूप फसल उत्पादन भी भरपूर दर्ज हुई। धान के बाद, 10 नवंबर तक गेहूं बोया गया, जिसके परिणामस्वरूप इसकी जल्दी कटाई संभव हो सकी और इस को ओलावृष्टि, तेज हवा और टर्मिनल उष्मा जैसे खतरों से समय रहते बचा लिया गया।

खरीफ–मक्का, रबी मक्का और खरीफ–चावल पर जुताई और पोषक तत्व प्रबंधन प्रथाओं का प्रभाव

खरीफ–मक्का, रबी–मक्का और खरीफ–चावल में उपज, मृदा स्वास्थ्य और राजस्व को बढ़ाने के लिए स्थान–विशिष्ट पोषक तत्व प्रबंधन (एस.एस.एन.एम) प्रणाली के साथ स्थायी बेड रोपण को लाभकारी पाया गया।

मंदिर अपशिष्ट प्रबंधन

बाबा बैद्यनाथ मंदिर, देवघर (झारखंड) और बाबा गरीबनाथ मंदिर (मुजफ्फरपुर, बिहार) जैसे मंदिरों में भगवान शिव को चढ़ाए जाने वाले फूलों और बेल के पत्तों का बहुतायत जमाव, परिसर में और साथ ही आसपास के क्षेत्रों में न सिर्फ पर्यावरण के लिए एक गंभीर खतरा पैदा करता है वरन, मंदिर तथा आस–पास के प्राकृतिक सौंदर्य का भी हनन करता है। भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल और के.वी.के. सुजनी (देवघर) एवं संबंधित मंदिर ट्रस्टों के सहयोग से, इन फूलों के प्रसाद को अब वर्मीकम्पोस्ट में परिवर्तित किया जा रहा है और यही नहीं, इसकी बिक्री से तीन महीने में 4.00 लाख रुपये का राजस्व भी प्राप्त हुआ है। मंदिर में स्वच्छता लाने के लिए अपशिष्ट प्रबंधन के इस मॉडल की व्यापक रूप से सराहना की गई है।

भूजल पुनर्भरण संरचना इकाई

मानसून के मौसम में उपलब्ध पर्याप्त जल का उपयोग करके भूजल पुनर्भरण किया जा सकता है। भूजल पुनर्भरण के महत्व और अतिरिक्त पानी की निकासी को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय, पूसा में एक पुनर्भरण संरचना का डिजाइन और विकास किया गया है। यह सिस्टम लगभग 6.5 lps फिल्टर जल को पुनर्भरण करके उसे दूसरे जलमृत से स्थान्तरित करता है ।

इको-हर्बल गुलाल

संक्रामक COVID–19 के प्रारंभिक प्रसार को देखते हुए विश्वविद्यालय ने होली के त्यौहार के दौरान फूलों और हर्बल अर्क के साथ स्वनिर्मित इको–हर्बल गुलाल रंगों का उपयोग करने के लिए सलाह दिया। विश्वविद्यालय में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय द्वारा 6 मार्च 2020 को वस्त्र और परिधान डिजाइनिंग उत्पादों को लोकप्रिय बनाने के लिए एक दिवसीय जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। हल्दी (करकुमा लोंगा) और गेंदा (टैगक्टेरेसेक्टा) से पीले रंग का निष्कर्षण किया गया जबकि अन्नतो के बीज (बिक्सोरेंला) से नारंगी रंग, पलास के फूल (ब्यूटेफ्रोनडोसा) से सुनहरे पीले रंग, सीम, सदाबहार (विन्का रोजा), और नीम के पत्तों (अजाद्रिक्टेनडिका) से हरे रंग का निष्कर्षण किया गया।इस गुलाल में गुलाब, लेमन ग्रास आदि की प्राकृतिक सुगंध भी मिश्रित थी। सभी रंगों के अलग–अलग शेड्स यानी लाइट, मीडियम एवं डार्क विकसित किए गए। इन उत्पादों को स्थानीय लोगों द्वारा बहुत पसंद किया गया तथा आसपास के बाजारों के दुकानदारों ने इन उत्पादों गहरी रूचि दिखाई।

जारी फसल किस्में :

विश्वविद्यालय कृषक समुदाय के लाभ हेतु अधिक उपज देने वाली तथा जलवायु अलुकूल फसल किस्मों के विकास के लिए हर प्रयास कर रहा है। CVRC/SVKC द्वारा सात उन्नत किस्में यथा राजेन्द्र गेहुं –1 और 3 (गेहूँ), राजेन्द्र सरस्वती (धान), राजेन्द्र गन्ना – 1 (गन्ना), राजेन्द्र धनिया 1 और 2 और राजेंद्र हाइब्रिड मक्का – 1, जारी किए गए हैं।

Rajendra Saraswati

Rajendra Gehun-3

Rajendra Ganna - 1

2 फरवरी, सन 2020 को विश्व वेटलैंड दिवस के अवसर पर "पालिसी फॉर रेजुवेनशन – कंजर्वेशन ऑफ वेटलैंड्स इन बिहार" विषय पर एक दिवसीय विचार–मंथन आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष, डॉ. आर.सी. श्रीवास्तव, माननीय कुलपति, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने उद्घाटन भाषण के दौरान कहा कि आर्द्रभूमि (वेटलैंड्स) प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के महत्वपूर्ण अंग हैं। वे बाढ़ नियंत्रण, कटाव नियंत्रण, भूजल पुनर्भरण, सूक्ष्म जलवायु विनियमन और प्रकृति सौंदर्य वृद्धि जैसे कार्यो का निष्पादन करते हैं। श्री दीपक कुमार सिंह, आई.ए.एस, प्रमुख सचिव, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन, बिहार सरकार, जो इस समारोह के मुख्य अतिथि भी थे, ने आर्द्रभूमि के कायाकल्प और संरक्षण पर अपने अनुभव साझा किए। इस कार्यक्रम में भारत सरकार, बिहार सरकार के सरकारी अधिकारियों, भा.कृ.अनु.प. के अनुसंधान संस्थानों, IIT और NIT, पटना के वैज्ञानिकों के अलावा विश्वविद्यालय के वरिष्ठ वैज्ञानिकों / शिक्षकों व अन्य सदस्यों ने भाग लिया।

कृषि प्रसार

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में किसान मेला 2020

ग्रामीण जीविकोपार्जन हेतु अवशिष्ट प्रबंधन विषय पर विश्वविद्यालय द्वारा किसान मेला –2020 का आयोजन 16 से 18 फरवरी, 2020 के दौरान किया गया। मेले का उद्घाटन श्री महेश्वर हजारी, माननीय मंत्री, योजना और विकास, बिहार सरकार द्वारा किया गया। उन्होंने सभी स्टालों का दौरा किया और किसानों के साथ बातचीत की। दूसरे दिन, श्री कैलाश चौधरी, माननीय राज्य मंत्री, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने किसान मेले के दौरान किसानों को संबोधित किया। तीसरे दिन, श्री गिरिराज सिंह, माननीय मंत्री, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी, भारत सरकार., नई दिल्ली समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने सभी स्टालों का दौरा किया और किसानों को संबोधित भी किया।

प्रौद्योगिकी और यांत्रिकी प्रदर्शन मेला

प्रथम दिवस

द्वितीय दिवस

तृतीय दिवस

कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, पूसा ने 14 फरवरी, 2020 को मधुबनी (बिहार) के वॉटसन स्कूल ग्राउंड में एक दिवसीय "प्रौद्योगिकी और यांत्रिकी प्रदर्शन मेला" का आयोजन किया। मेला के आयोजन को ए.आई.सी.आर.पी द्वारा एफ.आई.एम (एटी.ए.एम.ए.), मधुबनी द्वारा आर्थिक रूप से मदद किया गया। कार्यक्रम का उदघाटन मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ आर. सी. श्रीवास्तव ने किया। उन्होंने छोटे किसानों के साथ–साथ महिलाओं के अनुकूल

मशीनीकरण के लिए यांत्रिकी विकास की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित किया। इस अवसर पर गणमान्य अतिथि श्री बौद्ध प्रकाश, डी.सी.एल.आर, मधुबनी, श्री सुधीर कुमार, जिला कृषि अधिकारी, मधुबनी भी उपस्थित थे। मधुबनी और दरभंगा जिलों के विभिन्न हिस्सों से लगभग 900 किसानों ने भाग लिया और लगभग 25 ट्रैक्टर और मशीनरी निर्माता / डीलरों ने उनके नवीनतम मशीनरी का प्रदर्शन किया।

के.वी.के की प्रसार गतिविधियों की कुछ झलकियाँ :

प्रसार गतिविधियों को 16 के.वी.के. एवं विभिन्न महाविद्यालयों के अखिल भारतीय समन्वित अनुसन्धान कार्यक्रम. और अन्य परियोजनाओं के माध्यम से पूरा किया गया।

प्रसार गतिविधियों का समेकित विवरण निम्नानुसार सारणीबद्ध है :

गतिविधियाँ	संख्या
किसान मेला	02
किसान प्रशिक्षण	138
एफ.एल.डी.	5730
ओ.एफ.टी	85
एफ..सी.ऐस.	246
ए. इ.ओ.	10
टीवी/रेडियो टॉक	52
प्रौद्योगिकी मूल्यांकन	153

25 मई 2019 को, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा की तीसरी प्रसार शिक्षा परिषद की बैठक

के.वी.के. पिपराकोठी में पूर्व केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री भारत सरकार और पूर्वी चंपारण के माननीय सांसद (श्री राधा मोहन सिंह) के द्वारा किसानों के बीच राखी का त्यौहार और पौधों का वितरण।

माननीय कृषि मंत्री श्री प्रेम कुमार जी, बिहार सरकार ने के. वी.के. पिपराकोठी का 1 नवंबर 2019 को दौरा किया।

के.वी.के. पिपराकोठी ने 15 दिनों के आई.एन.एम प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रशिक्षुओं के लिए डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया। प्रशिक्षुओं ने विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों का दौरा किया। (27 नवंबर 2019)

माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी ने के.वी.के सिवान स्टाल का दौरा किया। (5 दिसंबर 2019, सीवान)

क्यू.आर.टी. अटारी जोन–IV और V (कोलकाता और पटना) ने वर्ष 2011 –19 के दौरान डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के समस्त के.वी.के में उनकी गतिविधियों और उपलब्धियों की समीक्षा के लिए 10–13 दिसंबर 2019 तक का दौरा किया।

के.वी.के. पिपराकोठी में पूर्व कृषि मंत्री, भारत सरकार और मोतिहारी सांसद द्वारा 15 दिसंबर 2019 प्रदर्शनी केंद्र और बीज बिक्री काउंटर का उद्घाटन।

शैक्षणिक अनुसंधान और विस्तार के लिए विश्वविद्यालय के रोडमैप को राजनगर मधुबनी में माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के समक्ष जल–जीवन–हरियाली मेले में प्रस्तुत किया गया।

राजभाषा हिंदी पखवाड़ा उत्सव

विश्वविद्यालय ने 11.09.2019 से 24.09.2019 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया । इस अवधि के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा, हिंदी और गैर हिंदी भाषी छात्रों और शिक्षकों के बीच निबंध, वाद–विवाद, अंताक्षरी, सामान्य ज्ञान तथा पेंटिंग का आयोजन किया गया। शिक्षकों / वैज्ञानिकों के बीच तकनीकी हिंदी लेखन प्रतियोगिता और प्रशासनिक / सहायक कर्मचारियों के बीच हिंदी आधिकारिक नोट्स लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आकाशवाणी, पटना के कलाकार के द्वारा 24.09.2019 को काव्य गोष्ठी का आयोजन भी किया गया। सम्मान समारोह 25.09.2019 को आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं के 60 विजेताओं (60 छात्रों ६ 03 वैज्ञानिकों और 3 प्रशासनिक६ सहायक कर्मचारियों) को माननीय कुलपति, डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव द्वारा प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

केन्द्रीय सुविधाएं

विश्वविद्यालय पुस्तकालय

रिपोर्ट की अवधि के दौरान की गई उपलब्धि का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है–

- पुस्तकालय में कुल फुटफॉल 44,134 दर्ज हुए ।
- छात्रों के शैक्षणिक एवं अनुसंधान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुल 10798 दस्तावेजों को परिचालित किया गया (5396 निर्गत और 5402 लौटाया गया)
- दो शाखा पुस्तकालय को (तिरहुत कृषि महाविद्यालय, और मतस्यकी महाविद्यालय, ढोली) कोहा–आई.एल.एम.एस के माध्यम से मुख्य पुस्तकालय से जोड़ा गया ।
- ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग एवं पाठ्य संसाधनों के पूर्ण संग्रह का चित्रण करते हुए किसी भी समय और कहीं भी उपयोग के लिए वेब ओपेक बनाया गया।
- कुल 1315 पुस्तकों को खरीद कर (1020 मुद्रित और 315 ई–पुस्तकें) शिक्षण संसाधनों को समृद्ध किया गया ।
- 3500 वैज्ञानिक को ई–जर्नल्स और 1716 ई–बुक्स पी.डी.एफ. प्रतियों को ऑनलाइन एक्सेस प्रदान किया गया है। कोविड –19 के प्रभाव से निपटने के लिए पाठ्य सामग्रियों को विभिन्न प्रकाशकों से डाउनलोड की गई हैं।
- पाठ्य सामग्रियों एवं संसाधनों एवं सेवा को समृद्ध करने पर 48.52 लाख रुपये खर्च किए गए और विभिन्न पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करने के उपरांत 12.21 लाख रुपये (10.57 पुस्तकालय छूट और 1.74 लाख रुपये) का राजस्व पुस्तकालय ने अर्जित किया है।
- छात्रों और शिक्षकों के एकीकृत अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए 25 और 26 मार्च 2020 को दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये जो क्रमशः जे–गेट सेरा' और 'टर्निटिन एंटी प्लेगिआरिस्म सॉफ्टवेयर' के उपयोग पर केन्द्रित थे।

CeRA @J-Gate Training

Turnitin PDS Training

ARIS सेल

विश्वविद्यालय मुख्यालय परिसर के एरिस सेल ने एक केंद्रीय सुविधा के रूप में सभी विभागों, अनुसंधान और विस्तार इकाइयों और सभी कॉलेजों के बीच संबंध स्थापित करके पूरे विश्वविद्यालय के लिए अपनी सेवाओं का विस्तार किया। इसके अतिरिक्त एरिस सेल निम्नवत कार्यों का सम्पादन करता है–

- सभी छात्रों और नए शामिल कर्मचारियों के लिए विश्वविद्यालय ई–मेल खातों और इंटरनेट खातों का निर्माण करना,
- विश्वविद्यालय स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क का दिन–प्रति–दिन रखरखाव।
- कंप्यूटर प्रणाली का रखरखाव।
- विश्वविद्यालय की वेबसाइट और दैनिक अद्यतन गतिविधियों का रखरखाव।
- एकीकृत खतरा प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से इंटरनेट उपयोगकर्ता यातायात की निगरानी।
- डिजिटल नोटिस बोर्डों के माध्यम से पाठ्य सामग्री एवं अन्य निर्देशों का प्रकाशन।
- विज्ञापित विभिन्न पदों के लिए कंप्यूटर प्रवीणता परीक्षा का आयोजन।
- प्लेसमेंट के लिए स्काइप साक्षात्कार
- नवनिर्मित अनुसंधान केंद्र, एस.आर.आई. और अन्य शैक्षणिक भवनों को ऑप्टिकल फाइबर केबल. से जोड़ा जा रहा है।

विश्वविद्यालय व्यायामशाला

छात्रों और निवासियों द्वारा उपयोग के लिए विश्वविद्यालय परिसर में एक अच्छी तरह से सुसज्जित व्यायामशाला स्थापित की गई।

पुरस्कार और सम्मान :

विभिन्न अकादमियों तथा संघों और संगठनों के विभिन्न स्तरों (1 अंतर्राष्ट्रीय, 72 राष्ट्रीय और 06 राज्य स्तरों) के कुल 79 पुरस्कार विश्वविद्यालय के शिक्षक / वैज्ञानिकों उनके अकादमिक और अनुसंधान उत्कृष्टता के लिए द्वारा प्राप्त किए गए।

माननीय कुलपति के पुरस्कार

1. लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, 2019 (अभियांत्रिकी, विज्ञान और चिकित्सा पर अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक पुरस्कार) VDGOOD प्रोफेशनल एसोसिएशन, साउथ इंडिया ब्रांच, चेन्नई (14.09.2019)
2. ISAE गोल्ड मेडल (07.01.2020 54वां ISAE वार्षिक सम्मेलन पुणे में आयोजित)।
3. 2020 एशिया–पैसिफिक ट्रिपल ई अवार्ड्स मैरिएट होटल, कोच्चि, केरल (संस्थागत पुरस्कार)।
4. विश्व कवि रवींद्रनाथ टैगोर मेमोरियल अवार्ड (2020)। 7 फरवरी, 2020 को रवींद्र भवन सभागार, 540 डमडम रोड, कोलकाता में ओरिएंटल हेरिटेज पर 43 वें वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान सम्मानित किया गया।
5. ए.आई.एफ के मानद फेलो। 27.02.2020 को आई.आई.एस.आर, लखनऊ में यूपी में एग्री–इनोवेशन को बढ़ावा देने और मान्यता देने पर कार्यशाला के दौरान सम्मानित।

छात्र गतिविधियाँ :

(पूर्व छात्र मिलन, वार्षिक खेल / सांस्कृतिक उत्सव)

कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय पूर्व छात्र मिलन समारोह 2019

7–8 दिसंबर 2019 स्थापना दिवस के साथ ही 2–दिवसीय पूर्व छात्रों की मिलन कार्यक्रम भी आयोजित की गई , जिसका उद्देश्य पूर्व छात्रों के बीच पेशेवर बंधन को मजबूत करना और समन्वय संबंध स्थापित करना था। महाविद्यालय के प्रथम बैच (1983–1987) से नवीनतम बैच (2015–2019) के विद्यार्थी ने आयोजन मे भाग लिया तथा देश के विभिन्न भागो से सौ से अधिक विद्यार्थियों एवं उनके परिवार जनो ने अपनी उपस्थिति दर्ज की

छात्र कल्याण गतिविधियाँ :

वार्षिक खेल 2019

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के वार्षिक इंटर कॉलेज गेम्स और स्पोर्ट्स (2019–20) 1 दिसंबर से 3 दिसंबर 2019 तक विश्वविद्यालय के खेल परिसर में आयोजित किया गया था। कुल मिलाकर 268 विभिन्न छात्रों, जिनमें आठ अलग–अलग कॉलेजों के 129 लड़कियां ने 20 अलग–अलग ट्रैक और फील्ड कार्यक्रमों में भाग लिया बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कबड्डी और वॉलीबॉल में लड़के भी शामिल हुए। माननीय कुलपति के साथ निदेशक छात्र कल्याण, अधिष्ठाता और विश्वविद्यालय के निदेशकों ने 3 दिसंबर को विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर पुरस्कार वितरण समारोह में भाग लिया।

एग्री–खेल प्रतियोगिता 2019–20 में भागीदारी

विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय के 36 खिलाड़ियों (23 छात्रों और 13 छात्राओं) की एक दल ने ऑल इंडिया इंटर – एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटीज स्पोर्ट्स एंड गेम्स मीट 2019–20 (एग्री–स्पोर्ट 2019–20) में भाग लिया, जो 1 से 5 मार्च, 2020 तक श्री वेंकटेश्वर पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश में आयोजित किया गया।।

20 वीं एग्री–यूनीफेस्ट (2019–2020) में भागीदारी

इंदिरा गांधी कृषि विश्व विद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) द्वारा 8–12 फरवरी, 2020 तक आयोजित 20 वें अखिल भारतीय अंतर–कृषि विश्वविद्यालय युवा महोत्सव (एग्री–यूनिफेस्ट) 2020 में विश्वविद्यालय के दो छात्रों ने भाग लिया।सिद्धांत कुमार सौरव और विनीत आनंद ने क्विज प्रतियोगिता में दूसरा स्थान हासिल किया और उन्हें रजत पदक से सम्मानित किया गया।

एनसीसी की गतिविधियाँ

26th January, 2020

Tree plantation

Promoting clean India campaign

Human chain in *Jal-Jeeban-Hariyali*

नयी पहल और नए कार्य प्रारम्भ

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा परिसर में तीन नए अनुसंधान भवन

बांस प्रसंस्करण केंद्र और सिंचित बांस वृक्षारोपण

पार्किंग शेड और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन

नए पुस्तकालय भवन का उद्घाटन एवं फ्रेश वाटर प्रॉन हेचरी का शिलान्यास (मतस्यकी महाविद्यालय,ढोली)

मतस्यकी महाविद्यालय, ढोली में दिनकर पुरुष छात्रावास का उद्घाटन

मौसम विज्ञान वेधशाला की स्थापना और उद्घाटन।

जल प्रबंधन भवन का उद्‌घाटन और पियर गांव में सौर ऊर्जा संचालित सिंचाई

मधुमक्खी पालन और शहद उत्पादन, ई.एल.पी.(E.L.P.) तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली

मशरूम पर ई.एल.पी. (E.L.P.) , तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली

चिल्ड्रन पार्क एवं स्टाफ क्लब, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा परिसर

तितली उद्यान एवं सतत आजीविका के लिए ढाब क्षेत्र में पर्माकल्चर

गन्ना अनुसंधान संस्थान में गन्ने के रस का काउंटर और गुर प्रसंस्करण केंद्र का उद्घाटन

वित्तीय अवलोकन : (रुपए करोड़ में)

क्रम सं.	विवरण	विवरण प्राप्त हुआ (स्त्रोत)					
		कृ.अनु.शि.प.	भा.कृ.अनु.प.	राज्य सरकार	विश्वविद्यालय प्राप्त	कुल प्राप्त	कुल व्यय
01	अनुदान–वेतन	80.00	11.125 (KVK)	-	-	91.125	91.125
02	अनुदान–सामान्य	09.55	2.1276 (KVK)	-	-	11.6776	11.6776
03	अनुदान–पूंजी	100.00	2.97 (KVK)	-	-	102.97	102.97
04	आईसीएआर–ए.आई.सी.आर.पी. (सामान्य)	-	3.377	-	-	3.377	3.377
05	आई.सी.ए.आर. शिक्षा प्रभाग	-	3.845	-	-	3.845	3.845
06	अन्य / विविध	-	-	50.00	08.61	58.61	58.61
	कुल योग	189.55	23.4455	50.00	08.61	271.605	271.605

विश्वविद्यालय की COVID–19 के साथ निपटने की तैयारी

(पेडल आधारित हाथ धोने का उपकरण, कैंपस के अंदर बूम छिड़काव, मास्क बनाना और वितरण एवं आगंतुकों का थर्मल स्कैनिंग)

प्रवेश द्वार पर बैरिकेडिंग और वाहनों की सफाई

- गूगल क्लासरूम, व्हाट्सएप ग्रुप, ऑनलाइन–क्लासेस

- विश्वविद्यालय वेबसाइट पर ई–पुस्तकें, पाठ्यक्रम सामग्री और ओपन शैक्षिणिक संसाधनों का वितरण एवं प्रयोग

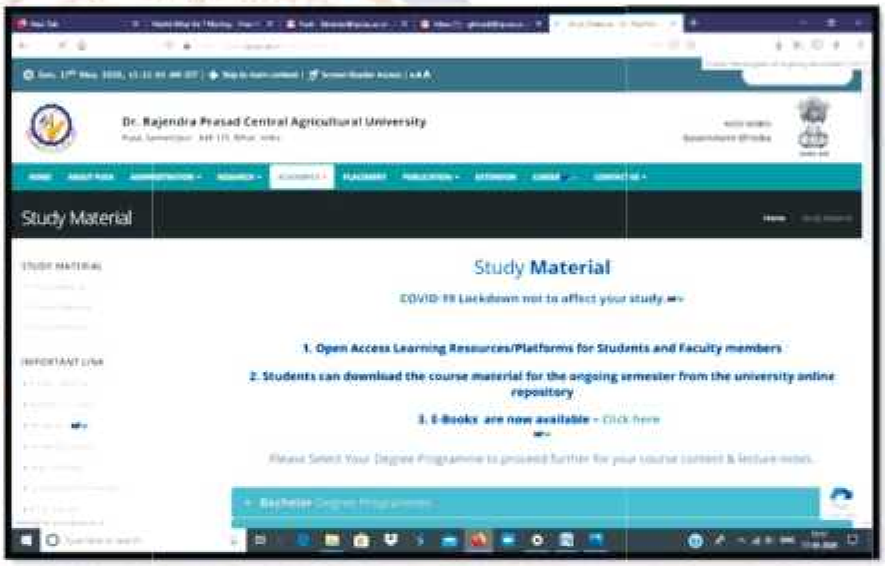

- सेरा (CeRA) कंसोर्टियम का कहीं भी ६ कहीं भी उपयोग की सुविधा दी गयी

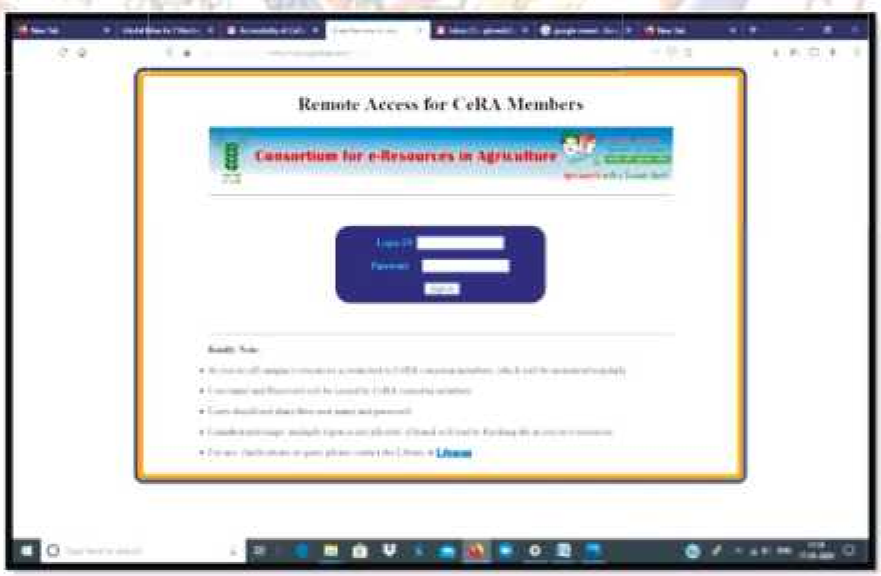

माँ सरस्वतयै नमः

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा, समस्तीपुर (बिहार)–848125